

STUDY MATERIAL FOR XI and B.A-I

Industrial Revolution

औद्योगिक क्रांति

औद्योगिक क्रांति से तात्पर्य

18वीं सदी के मध्य में हुई औद्योगिक क्रांति का यूरोपीय इतिहास में एक युग विभाजक महत्त्व है। सामान्य संदर्भों में औद्योगिक क्रांति को उद्योग क्षेत्र में होने वाले तीव्र विकास के स्तर पर परिभाषित किया जाता है पर वास्तव में यह सिर्फ उत्पादन के तीव्र विकास से संबंधित नहीं थी वरन् एक क्रांति थी। यहाँ क्रांति का तात्पर्य है कि औद्योगिक क्रांति अपने उद्भव, विकास एवं प्रभाव तीनों स्तरों पर विविध आयामी और दूरगामी थी। यह सिर्फ आर्थिक परिघटना नहीं वरन् सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक संदर्भों से भी जुड़ी हुई थी।

औद्योगिक क्रांति की पृष्ठभूमि

18वीं सदी के मध्य में ब्रिटेन में प्रारम्भ औद्योगिक क्रांति से कई रूपों में आधुनिक यूरोप के एक नए चरण का प्रारम्भ होता है। औद्योगिक क्रांति के प्रारम्भ को पूँजीवाद के वास्तविक प्रारम्भ के रूप में भी देखा जाता है। इस रूप में 14वीं-15वीं शताब्दी में सामंतवाद के पतन से लेकर 18वीं सदी के मध्य में औद्योगिक क्रांति के प्रारम्भ के बीच के काल को सामंतवाद से पूँजीवाद की ओर संक्रमण काल के रूप में भी देखा जा सकता है।

औद्योगिक क्रांति की पृष्ठभूमि 15वीं शताब्दी के पुनर्जागरण से प्रारम्भ हुई विभिन्न राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक एवं सांस्कृतिक तथा वैज्ञानिक संदर्भों से तैयार होती है। राजनीतिक संदर्भों में जहाँ सामंतवाद का पतन हुआ और राजा के पास सर्वोच्च शक्ति के विकास के रूप में राष्ट्र-राज्य विकसित हुआ। ब्रिटेन राष्ट्र-राज्य के विकास का आदर्श उदाहरण प्रस्तुत करता है। इन राष्ट्र-राज्यों ने अर्थव्यवस्था के विकास में सकारात्मक भूमिका निभाई, क्योंकि इस पर इनकी भी मजबूती निर्भर करती थी।

सामाजिक संदर्भों में विभिन्न सामाजिक परिवर्तनों से मध्य वर्ग विकसित हो रहा था और मध्य वर्ग का प्रमुख अंग व्यवसायी वर्ग था। यह वर्ग किसी न किसी रूप में तत्कालीन राजनीतिक व्यवस्था को भी प्रभावित कर रहा था। इस वर्ग ने आर्थिक गतिविधियों को विकसित करने में हर स्तर पर योगदान दिया।

आर्थिक संदर्भ में 14वीं-15वीं शताब्दी में सामंतवाद के पतन की प्रक्रिया शुरू हुई, जो आगे तेज होती गई। 16वीं सदी आर्थिक क्षेत्र में विभिन्न घटनाओं की सदी रही है, इसमें भौगोलिक खोज, व्यापार केन्द्र का भूमध्य सागरीय क्षेत्र से अटलांटिक महासागर क्षेत्र में स्थानांतरण, वाणिज्यिक क्रांति, मूल्य क्रांति आदि उल्लेखनीय हैं।

17वीं सदी आर्थिक संदर्भों में संकट की सदी मानी गई, क्योंकि इस समय कुछ प्राकृतिक आपदाओं, जनसंख्या में कमी एवं अन्य कारणों से अर्थव्यवस्था में गिरावट देखी गई पर आगे चलकर पुनः 18वीं सदी में आर्थिक चक्र की संकल्पना के तहत अर्थव्यवस्था में एक बार फिर उछाल दिखाई पड़ता है, जिसे हम औद्योगिक क्रांति के रूप में देख सकते हैं।

सांस्कृतिक संदर्भ में, पुनर्जागरण काल के प्रभावस्वरूप विज्ञान एवं तर्क आधारित एक नई यूरोपीय संस्कृति विकसित हुई, जिसके प्रभावस्वरूप धर्म सुधार आंदोलन विकसित हुआ, जिसने पूँजीवादी तत्वों के विकास में निर्णायक भूमिका निभाई। 16वीं-17वीं शताब्दी की वैज्ञानिक क्रांति से भी तकनीकी क्षेत्र में औद्योगिक क्रांति हेतु पृष्ठभूमि तैयार हो गई।

वैचारिक संदर्भ में, 15वीं शताब्दी में जिस वाणिज्यवाद आधारित आर्थिक नीति का प्रारम्भ हुआ था, वह 17वीं सदी के संकट के समय आलोचना का शिकार बनी तथा 18वीं सदी में आकर जब औद्योगिक क्रांति स्वरूप लेने लगी तो

कई अर्थों में यह अप्रासंगिक होने लगी। वाणिज्यवाद आर्थिक गतिविधियों में सरकारी हस्तक्षेप की बात करता था, अब औद्योगिक प्रसार हेतु अर्थव्यवस्था के मुक्त विकास की आवश्यकता थी। इसी बात को आधुनिक अर्थशास्त्र के जनक एडम स्मिथ ने अपनी पुस्तक 'द वेल्थ ऑफ नेशंस' द्वारा भी प्रचारित प्रसारित किया। एडम स्मिथ जैसे विचारकों ने एक प्रकार से औद्योगिक क्रांति की वैचारिक पृष्ठभूमि तैयार कर दी।

इंग्लैण्ड में औद्योगिक क्रांति के प्रारंभ होने के कारण

18वीं सदी के मध्य में ब्रिटेन में औद्योगिक क्रांति का प्रारम्भ हुआ, जो आगे चलकर अन्य देशों में भी अपने परिवेश के अनुरूप प्रसारित होता गया। जिस तरह इटली में पुनर्जागरण के प्रारम्भ होने के पीछे वहाँ की अनुकूल परिस्थितियाँ थीं, उसी तरह ब्रिटेन में भी औद्योगिकीकरण के लिए वे आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक तत्व मौजूद थे, जिसके कारण वह प्रथम औद्योगिक देश बनकर विश्व क्षितिज पर स्थापित हुआ जबकि अन्य देश जैसे स्पेन, पुर्तगाल, फ्रांस आदि ब्रिटेन की तरह विकसित नहीं हो पाए। इंग्लैण्ड प्रथम औद्योगिक देश कैसे बना? इसे निम्न बिंदुओं पर देखा जा सकता है-

प्राकृतिक कारण

खनिज उपलब्धता- उद्योगों के विकास के लिए खनिज आधारभूत तत्व है। ब्रिटेन के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में लोहा एवं कोयले की अनेक खानें थीं, जिनसे प्राप्त खनिजों से ब्रिटिश उद्योगों को काफी बढ़ावा मिला।

ऊर्जा उपलब्धता- ब्रिटेन के कई क्षेत्रों में नदियों की जल उपलब्धता के कारण वहाँ जल विद्युत परियोजनाएँ स्थापित की गईं, जिससे प्राप्त ऊर्जा का उपयोग उद्योगों के लिए भी किया गया।

बंदरगाह- ब्रिटेन की भौगोलिक अवस्थिति इस प्रकार से थी कि इसके तटीय इलाके काफी कटावदार थे, जहाँ पर सहजता से बंदरगाहों का विकास संभव हो सका। बंदरगाहों के विकास से व्यापार को काफी बढ़ावा मिला, जो उद्योगों के विकास में महत्वपूर्ण रहा।

सामाजिक कारण

14वीं-15वीं शताब्दी से ही विभिन्न परिवर्तनों के प्रभावस्वरूप

ब्रिटेन में एक भिन्न रूप में सामाजिक संरचना का विकास हुआ, जिसकी मूल विशेषता एक सशक्त मध्य वर्ग का विकास था और इस मध्य वर्ग का मुख्य भाग व्यवसायी वर्ग था। यह वर्ग हर तरह से औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया में अपनी भूमिका निभाकर अपना विकास चाहता था। साथ ही यहाँ एक मजदूर वर्ग भी विकसित हो रहा था, जो धीरे-धीरे समाज में महत्वपूर्ण होता गया।

राजनीतिक कारण

14वीं-16वीं शताब्दी में सामंतवाद के पतन के पश्चात् यूरोप के कई भागों में राष्ट्र-राज्यों का विकास हुआ। इनके विकास में ब्रिटेन में ट्यूडर वंश के नेतृत्व में जिस राष्ट्र-राज्य का विकास हुआ, उसने कई तरह से आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहित किया। इसका कारण यह भी था कि इसके माध्यम से वे सामंती संरचना के स्थान पर अपना प्रभाव स्थापित कर सकते थे।

आगे चलकर 1688 ई. की गौरवपूर्ण क्रांति के द्वारा ब्रिटेन में व्यवस्थित रूप से संसदीय शासन स्थापित हुआ। इस पर भी व्यवसायी वर्ग का व्यापक प्रभाव था। परिणामतः ब्रिटिश सरकार द्वारा जो नीतियाँ बनाई गईं वो औद्योगिक हितों के लिए अनुकूल थीं। यहाँ तक की ब्रिटिश सरकार आर्थिक विकास हेतु सैन्य सहायता एवं युद्ध तक के लिए तैयार रहती थी।

आर्थिक कारण

ब्रिटेन में 17वीं-18वीं शताब्दी में एक प्रकार की कृषि-क्रांति भी हुई जिसके पीछे इस क्षेत्र में हुए तकनीकी सुधारों की उल्लेखनीय भूमिका थी। इन तकनीकी सुधारों के तहत बीज बोने की ड्रिल मशीन, फसल चक्र पद्धति आदि महत्वपूर्ण रही। इनके प्रभाव से कृषि क्षेत्र के उत्पादन में व्यापक बढ़ोत्तरी हुई जिससे उद्योगों के लिए भी कच्चे माल की उपलब्धता हो पाई। कृषि क्षेत्र में एक बड़ा परिवर्तन बाड़बंदी भूमि व्यवस्था के कारण भी हुआ, जिसके तहत कृषि हेतु बड़े प्लॉटों का निर्माण किया गया, इससे भी कृषि उत्पादन में बढ़ोत्तरी हुई।

18वीं सदी के मध्य तक विभिन्न कारणों से ब्रिटेन में मजदूरों की उपलब्धता अन्य स्थानों से ज्यादा थी, जैसे बाड़बंदी व्यवस्था के कारण कई किसान बेकार हो गए और

उन्होंने शहरों की ओर पलायन किया तथा वे किसान से मजदूर बन गए थे।

कृषि क्षेत्र में हुए तकनीकी सुधारों से भी कई लोग बेकार हो गए तथा इन लोगों से भी मजदूरों की संख्या में वृद्धि हुई। 18वीं सदी में ब्रिटेन की जनसंख्या में लगभग 40 प्रतिशत तक वृद्धि हुई, यह भी मजदूरों की उपलब्धता का एक बड़ा कारण था।

16वीं सदी में हुए धर्म सुधार आंदोलन के पश्चात् जब 17वीं शताब्दी में कैथोलिक एवं प्रोटेस्टैंट के बीच तीस वर्षीय (1618-48) युद्ध हुआ तो इस युद्ध में यूरोप के लगभग सारे देश शामिल हुए, किंतु ब्रिटेन अलग रहा, अतः जो शरणार्थी थे, वे भी ब्रिटेन आए और मजदूरों के रूप में परिणत हुए। कुटीर उद्योगों के पतन से भी मजदूरों की उपलब्धता बढ़ी।

पूँजी की उपलब्धता

उद्योगों की स्थापना एवं विस्तार के लिए पूँजी का निर्णायक महत्व होता है, ब्रिटेन में विभिन्न तरीकों से पूँजी की उपलब्धता संभव हो पाई; जैसे - ब्रिटेन के पास कई उपनिवेश थे, जहाँ से व्यापक स्तर पर पूँजी आई। उदाहरण के लिए बंगाल विजय के पश्चात् 1765 से 1772 तक द्वैध शासन के तहत व्यापक स्तर पर पूँजी की निकासी की गई। इस पूँजी का प्रयोग काफी हद तक ब्रिटेन के उद्योगों में हुआ।

ब्रिटेन के लोगों में बचत की प्रवृत्ति थी। इस प्रवृत्ति ने भी यहाँ पूँजी निर्माण में योगदान दिया। यहाँ पर कई संयुक्त पूँजी कम्पनियों की स्थापना एवं विकास हुआ; जैसे ईस्ट इंडिया कम्पनी (1600) वर्जीनिया कंपनी (1606) आदि। इन कंपनियों के माध्यम से भी उद्योगों के लिए पूँजी उपलब्धता संभव हुई। ब्रिटेन में बैंकिंग एवं बीमा का भी व्यापक विकास दिखाई पड़ता है। उदाहरण के लिए लंदन के निकट लोम्बार्डी में बैंकिंग पद्धति विकसित हुई, जहाँ पर बहुत खुले रूप में पैसों का आदान-प्रदान होता था। पूँजी की इस उपलब्धता ने भी औद्योगिक विकास को बढ़ावा दिया।

उपनिवेश

ब्रिटेन के पास बड़ी संख्या में उपनिवेश थे। इन उपनिवेशों के कारण उद्योगों की बड़ी आवश्यकता कच्चा माल एवं

बाजार की पूर्ति संभव हो पाई। इसने भी ब्रिटिश औद्योगिकीकरण में बड़ी भूमिका निभाई।

परिवहन साधनों का विकास

सड़क- मैकडम ने रोलर मशीन का आविष्कार किया, जिसके कारण सड़क निर्माण क्षेत्र में अभूतपूर्व प्रगति हुई।

रेल- 1769 ई. में जेम्स वाट ने भाप इंजन का आविष्कार किया। इस आविष्कार से औद्योगिक मालों को लाने एवं ले जाने में काफी सहूलियत हुई। ब्रिटेन में इसी समय लिवरपूल एवं मेनचेस्टर के बीच पहली रेलगाड़ी चली।

जल परिवहन- फुल्टन ने वाष्प चालित नौका का विकास किया। इससे जल परिवहन में काफी सहायता मिली।

अन्य- इनके अतिरिक्त ब्रिटेन में 18वीं सदी के मध्य से ही कई पुलों एवं नहरों का निर्माण हुआ, इससे भी परिवहन क्षेत्र में क्रांतिकारी परिवर्तन हुए। इसी समय मोटरगाड़ी का भी आविष्कार हुआ।

वैज्ञानिक एवं तकनीकी विकास

औद्योगिक क्रांति का सर्वाधिक प्रमुख क्षेत्र वस्त्र उद्योग ही था। इस क्षेत्र में 18वीं सदी में विभिन्न आविष्कार हुए जिसके कारण उत्पादन क्षेत्र में तीव्रता आई।

■ **फ्लाइंग शटल (1733)**- जॉन के द्वारा निर्मित इस मशीन के द्वारा बिना हाथ के प्रयोग से सूत को करघे के दोनों ओर बांटना संभव हो सका।

■ **स्पिनिंग जेनी (1764)**- जेम्स हारग्रिक्स द्वारा निर्मित इस मशीन के माध्यम से बहुत अधिक मात्रा में एक साथ सूत कातना संभव हो पाया (80 आदमियों के बराबर सूत कात सकती थी)।

■ **वाटर फ्रेम (1770)**- आर्क़राइट द्वारा निर्मित यह जल शक्ति से चलाई जाने वाली सूत कातने वाली मशीन थी।

वैचारिक कारण

औद्योगिक क्रांति को ब्रिटेन में एडम स्मिथ के विचारों से भी काफी बढ़ावा मिला। इन्होंने अपनी पुस्तक 'द वेल्थ ऑफ नेशंस' में जिस तरह से अहस्तक्षेप की नीति का प्रतिपादन किया, उसके कारण भी औद्योगिकीकरण के तत्वों को काफी बढ़ावा मिला। वास्तव में, औद्योगिक क्रांति

आधुनिक यूरोप को वास्तविक अर्थों में आधुनिक बनाने वाली घटना थी। इसे एडम स्मिथ के विचारों से व्यापक स्तर पर वैचारिक समर्थन मिला। इस कारण एडम स्मिथ को आधुनिक अर्थशास्त्र का जनक भी कहा जाता है।

इस प्रकार उपरोक्त प्राकृतिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक, वैज्ञानिक एवं तकनीकी परिस्थितियों के कारण ब्रिटेन संसार का पहला औद्योगिक देश बन सका, जबकि अन्य देश इस दौड़ में पिछड़ गए।

स्पेन, पुर्तगाल अपनी पूँजी का उपयोग अपनी घरेलू अर्थव्यवस्था के विकास में नहीं कर सके। नीदरलैंड सीमित रूप से सफल रहा पर ब्रिटेन से प्रतिस्पर्धा के कारण बहुत विकसित नहीं हो सका। इटली बिखरा हुआ था। जर्मनी में खनिज एवं कच्चा माल तो था पर सामंती व्यवस्था के कारण उद्योगों का विकास रूका हुआ था। फ्रांस में भी सामंतवाद आधारित निरंकुशतंत्र व्याप्त था, जबकि रूस में जारशाही के शासन में उद्योगों के विकास हेतु सकारात्मक परिस्थितियों का अभाव था।

औद्योगिक क्रांति का विस्तार

अमरीका

1776 ई. के पूर्व तक अमरीका ब्रिटेन का उपनिवेश था तथा इस समय तक ब्रिटेन की औपनिवेशिक नीतियों के कारण अमरीका में औद्योगिक विकास संभव नहीं हो पा रहा था। 1776 ई. में अमरीका को स्वतंत्रता मिली पर क्षेत्रीय असमानताओं के कारण राजनीतिक, सामाजिक एवं आर्थिक गतिरोध चलता रहा। अमरीका में उद्योगों का समुचित विकास नहीं हो पाया। इन क्षेत्रीय असमानताओं के कारण 1861 से 1865 के बीच अमरीका में उत्तरी तथा दक्षिणी क्षेत्रों में गृह युद्ध भी हुआ। इस गृह युद्ध की समाप्ति से ही अमरीका वास्तव में एक राष्ट्र के रूप में स्थापित हो सका, क्योंकि अब उत्तर एवं दक्षिण की असमानताओं की समाप्ति हुई एवं अमरीका अब औद्योगिकीकरण के मार्ग पर समुचित रूप से आगे बढ़ सका।

जर्मनी

जर्मनी में औद्योगिकीकरण का वास्तविक विकास 1871 ई. में इसके एकीकरण की प्रक्रिया के पश्चात् प्रारम्भ हुआ पर

1871 ई. के पूर्व एकीकरण की प्रक्रिया के दौरान ही औद्योगिकीकरण हेतु पृष्ठभूमि तैयार हुई। 19वीं शताब्दी के प्रारम्भ में जर्मनी एक सामंती देश के रूप में कई राज्यों में बंटा हुआ था। इसी समय 1818 ई. में 'जोल्वेरिन' नामक एक समान चुंगी संघ की स्थापना होती है। आगे चलकर फ्रेडरिक लिस्ट जैसे जर्मन विचारक आते हैं, जिन्होंने जर्मन आर्थिक राष्ट्रवाद की संकल्पना रखते हुए जर्मन भाषी सभी छोटे राज्यों के बीच मुक्त व्यापार की बात की। जर्मनी का महत्वपूर्ण राज्य प्रशा का रूर क्षेत्र लोहा एवं कोयले जैसे खनिजों की दृष्टि से काफी संपन्न था। इन खनिजों से उद्योगों के विकास को बढ़ावा मिला। परिणामतः प्रशा, सैक्सोनी, साइलेशिया आदि विभिन्न जर्मन राज्यों में नए उद्योगों की स्थापना हुई।

रूस

रूस में औद्योगिकीकरण की वास्तविक शुरुआत 1917 ई. की रूसी क्रांति से ही हो पाती है। इससे पहले जारशाही शासन में बलात् औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया रही, पर सफल नहीं हो पाई। 1917 ई. में रूसी क्रांति के बाद जब लेनिन की सरकार आई तब नई आर्थिक नीति द्वारा उद्योगों का राष्ट्रीयकरण कर इनका विकास किया गया। लेनिन के पश्चात् स्टालिन के समय विभिन्न पंचवर्षीय योजनाओं के माध्यम से उद्योगों का विकास हुआ। उदाहरण के लिए प्रथम पंचवर्षीय योजना (1928-32) में भारी उद्योगों की स्थापना पर बल दिया गया। दूसरी एवं तीसरी पंचवर्षीय योजनाओं में भारी उद्योगों के साथ ही उपभोक्ता वस्तुओं पर भी बल दिया गया। इन नीतियों का ही प्रभाव था कि 1940 ई. में रूस विश्व का सबसे बड़ा लोहा इस्पात निर्माणकर्ता बन गया था।

जापान

जापान के औद्योगिकीकरण के इतिहास में 1868 ई. का महत्वपूर्ण स्थान है। इससे पहले यहाँ पर 'तोकुगावा शोगुनेत' व्यवस्था थी, जो एक सामंती व्यवस्था थी जिससे उद्योगों का विकास संभव नहीं था। 1868 ई. में मेइजी वंश की पुनर्स्थापना से जापान में आधुनिकीकरण के रूप में औद्योगिकीकरण की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई, जिसके प्रभाव से आगे चलकर जापान एक शक्तिशाली राष्ट्र के रूप में उभरा।

कृषि क्षेत्र में सामंती व्यवस्था की जगह पर कृषि अर्थव्यवस्था आई, बेगार प्रथा का अंत हुआ। मेइजी शासन द्वारा कृषि क्षेत्र में सुधार हेतु पाश्चात्य देशों से कृषि विशेषज्ञ बुलाए गए तथा कृषि शिक्षा, कृषि सुधार समिति आदि संस्थाएँ गठित की गईं। कृषि सुधारों से उद्योगों हेतु कच्चा माल सहजता से उपलब्ध हुआ। नई तकनीकों के प्रयोग द्वारा नए खनिज क्षेत्रों की खोज की गई। 1870 ई. में उद्योग मंत्रालय की स्थापना हुई, जिसके माध्यम से स्थानीय एवं राष्ट्र स्तर पर विभिन्न उद्योगों के बीच एकीकृत प्रणाली स्थापित की गई, जिससे औद्योगिक विकास को बढ़ावा मिला। 1872 ई. में टोक्यो एवं याकोहामा के बीच जापान की पहली रेलगाड़ी चली, साथ ही भाप शक्ति आधारित जहाजों का भी विकास किया गया। टेलीग्राफ तथा टेलीग्राम की भी शुरुआत हुई। नेशनल बैंक ऑफ जापान तथा सेंट्रल बैंक ऑफ जापान आदि की स्थापना से बैंकिंग व्यवस्था में काफी बढ़ोत्तरी हुई।

औद्योगिक क्रांति के प्रभाव

18वीं सदी के मध्य में हुई औद्योगिक क्रांति अपने प्रभावों के स्तर पर भी क्रांति की अवधारणा को स्थापित या अभिव्यक्त करती है। इसके प्रभावों को हम आर्थिक, सामाजिक, राजनीतिक आदि संदर्भों में देख सकते हैं-

आर्थिक

औद्योगिक क्रांति के दौरान हुए विभिन्न परिवर्तनों से उत्पादन की प्रक्रिया में तीव्रता आई। यह तीव्रता वस्तुओं की मात्रा के स्तर पर ही नहीं वरन् विविधता के स्तर पर भी देखी गई। तीव्रता के पीछे मूल कारण औद्योगिक उत्पादन प्रक्रियाओं में मशीनों का बहुतायत प्रयोग था।

औद्योगिकीकरण के कारण अब उत्पादन प्रक्रिया में परिवर्तन आया। घरेलू पद्धति या कुटीर उद्योग पद्धति की जगह पर कारखाना पद्धति की स्थापना एवं विकास हुआ। उत्पादन प्रक्रिया के परिवर्तन से भी वस्तुओं के उत्पादन स्तर में तीव्रता आई।

कुटीर उद्योगों या गृह उद्योगों के विनाश से कई लोग बेरोजगार हो गए। इस बेकारी से मजदूरों की दुर्दशा भी सामने आई, साथ ही जनसंख्या का स्थानांतरण ग्रामीण क्षेत्रों से शहरी क्षेत्रों की ओर होने लगा। शहरों में जनसंख्या के

अत्यधिक दबाव से नगरीकरण संबंधित अनेक समस्याएं भी सामने आईं, हालांकि उद्योगों की स्थापना एवं विस्तार से लोगों के जीवन स्तर में भी सुधार हुआ, जिसके कारण जनसंख्या में वृद्धि देखी गई तथा मृत्यु दर में कमी आई।

औद्योगिक क्रांति की माँगों के अनुरूप पहले से चली आ रही सरकारी हस्तक्षेप आधारित वाणिज्यवाद की नीति अब अप्रासंगिक होने लगी, क्योंकि अब उद्योगों के प्रसार के लिए अधिक से अधिक कच्चे माल तथा बाजार की जरूरत थी और ये जरूरतें सिर्फ सरकार अधिकृत या निर्देशित कुछ कंपनियों के माध्यम से पूरी हो पाना संभव नहीं थी। अतः अब उद्योगों हेतु मुक्त व्यापार नीति की जरूरत थी, परिणामतः वाणिज्यवाद की नीति पतन की ओर अग्रसर हो गई।

सामाजिक

औद्योगिक क्रांति के परिवेश में अब समाज स्पष्ट रूप से दो स्तरों पर विभाजित हो गया। प्रथम-पूँजीपति या उद्योगपति या बुर्जुआ वर्ग, दूसरा- मजदूर या सर्वहारा वर्ग। इन दो वर्गों के विकास से सामाजिक स्तर पर नए प्रकार के परिवर्तन सामने आए जिसे हम आगे चलकर विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक एवं आर्थिक परिवर्तनों में देख सकते हैं।

समाज की मूल इकाई परिवार के स्तर पर भी कुछ नए परिवर्तन आए, विशेषकर उद्योगों के प्रभावस्वरूप जो परिस्थितियाँ पैदा हुईं उसमें संयुक्त परिवार टूटने लगे तथा उसकी जगह एकल परिवारों की स्थापना हुई। पारिवारिक स्तर पर इस परिवर्तन से भी सामाजिक संबंधों के स्तर पर नए तत्व सामने आए।

राजनीतिक

औद्योगिक क्रांति के प्रभावस्वरूप पहले से चले आ रहे उपनिवेशवाद एवं साम्राज्यवाद का विकास अब इसकी आवश्यकताओं के अनुरूप होने लगा, जिसके कारण 19वीं सदी में नव-साम्राज्यवाद की अवधारणा विकसित हुई। यह अवधारणा पहले की अवधारणा से इस रूप में भिन्न थी कि इसमें मूलतः आर्थिक व व्यापारिक हितों को केन्द्र में रखने की बात की गई। साथ ही कच्चा माल और बाजार की होड़ ने नव-साम्राज्यवाद के स्वरूप को निर्धारित किया। आगे चलकर यह होड़ काफी हद तक प्रथम विश्व युद्ध के कारणों के लिए भी उत्तरदायी बनी।

इस क्रांति के प्रभावस्वरूप ही मजदूरों के हितों की बात करते हुए समाजवाद, उदारवाद जैसी विचारधाराएं व्यवस्थित रूप ग्रहण कर सकीं। दोनों में अंतर यह रहा कि जहाँ समाजवाद में स्पष्ट रूप से मजदूर हितों की बात थी, वहीं उदारवाद में मालिक-मजदूर समन्वय पर जोर दिया गया था। यही कारण है कि आगे चलकर समाजवाद ही मजदूरों के बीच ज्यादा लोकप्रिय हुआ।

औद्योगिक क्रांति के प्रभाव से मजदूर एकजुटता में भी वृद्धि हुई। परिणामतः मजदूरों ने अपने हितों के अनुरूप मजदूर संघों का विकास किया और इन संघों के माध्यम से कई राजनीतिक, आर्थिक मांगों को लेकर मजदूर आंदोलन भी चलाए गए। उदाहरण के लिए 19वीं सदी के मध्य में मजदूरों द्वारा 'चार्टिस्ट आंदोलन' चलाया गया, जिसका मूल

उद्देश्य ब्रिटेन में संसदीय सुधारों द्वारा मजदूरों को समुचित अधिकार दिलाना था।

औद्योगिक क्रांति के स्वरूप पर विवाद

औद्योगिक क्रांति को क्रांति कहना ठीक है या नहीं, इसको लेकर विद्वानों के बीच विवाद है। कुछ विद्वानों का मानना है कि इसे क्रांति नहीं माना जा सकता क्योंकि निर्मित वस्तुओं की विविधता नहीं थी, मुख्यतः कपड़ा, लोहा आदि उद्योगों का ही विकास हुआ। ब्रिटेन के सभी क्षेत्रों में उद्योग स्थापना नहीं हुई, सिर्फ लंदन, बर्मिंघम, मेनचेस्टर आदि में ही उद्योग स्थापित हुए। साथ ही औद्योगिक विकास की गति में तेजी 18वीं सदी की बजाय 19वीं सदी के प्रारम्भ में हुई। इन सबके बावजूद विभिन्न आधारों पर इसे औद्योगिक क्रांति के ही नाम से जानने की आम धारणा है।